हिन्दी
IX - R.B

8. बचपन के दिन

(ए० पी० जे० अब्दुल कलाम)

मुहावरे - विष घोलना (भेद डालना) - वे दोनों भाई प्रेम से रहते थे, लेकिन मोहन ने उनमें विष घोल दिया।

दुःख व्यक्त करना (अफसोस करना) - शिक्षक ने अपने भेदभावपूर्ण व्यवहार पर दुःख व्यक्त किया।

उत्साह बढ़ाना (प्रेरित करना) - कमजोर छात्र भी उत्साह बढ़ाने पर जीवन में ऊँचाई को छू लेते हैं।

नियति बदलना (भाग्य बदलना) - परिश्रम से नियति बदल जाती है।

बहुविकल्पीय प्रश्न -

i. भूतपूर्व राष्ट्रपति ए० पी० जे० अब्दुल कलाम का जन्म हुआ था ?
(क) बिहार में (ख) उड़ीसा में (ग) तमिलनाडु में (घ) कर्नाटक में। उत्तर - (ग)

(ख) रामानंद के पिता थे ;
(क) सरकारी सेवक (ख) मन्दिर के पुजारी (ग) किसान (घ) व्यवसायी। उत्तर - (ख)

(ग) अब्दुल कलाम के बचपन में कितने पक्के मित्र थे ?
(क) दो (ख) तीन (ग) चार (घ) पाँच। उत्तर - (ख)

ii. ए० पी० जे० अब्दुल कलाम को शिक्षा ग्रहण करने में किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा ?
उत्तर - ए० पी० जे० अब्दुल कलाम को शिक्षा ग्रहण करने में आर्थिक, सामाजिक

था धार्मिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा।

iii. नये शिक्षक के द्वारा डॉ अब्दुल कलाम को उनके मित्र रामानंद से अलग हटकर बैठने को कहा गया। शिक्षक के इस व्यवहार पर अपनी राय तर्क सहित दीजिए।

उत्तर - मेरे विचार से नये शिक्षक के द्वारा डॉ अब्दुल कलाम को अपने मित्र रामानंद से अलग बैठने के लिए कहना सर्वथा अनुचित था क्योंकि विद्यालय ज्ञान प्राप्ति का केन्द्र होता है। यहाँ सबको समान रूप से शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार है। विद्यालय में समानता, बंधुत्व एवं सहिष्णुता की शिक्षा दी जाती है। शिक्षक के लिए सभी छात्र संतान समान होते हैं। विद्यालय एक ऐसी फुलवारी के समान होता है, जहाँ रंग-बिरंगे फूल खिलने से उनकी शोभा में चार चाँद लग जाते हैं। फिर मानव-मानव में भेद क्यों, जबकि सभी एक ही प्रभु की देन हैं।

iv. रामानंद के पिता ने दोनों दोस्तों के प्रति भेदभाव का व्यवहार करने वाले शिक्षक से क्या कहा और ऐसा उन्होंने क्यों कहा?

उत्तर - रामानंद के पिता ने दोनों दोस्तों के प्रति भेदभाव का व्यवहार करनेवाले शिक्षक से कहा कि इन निर्दोष बच्चों के दिमाग में इस प्रकार की सामाजिक असमानता एवं साम्प्रदायिकता का विष नहीं घोलना चाहिए। इन पढ़नेवाले बच्चे विद्यार्थी कहलाते हैं। इसलिए वे सभी शिक्षक की दृष्टि में समान होते हैं। सच्चे गुरु किसी के साथ भेदभाव नहीं करते हैं।

i. वाक्य बनाइये :-

उत्तर - गली - मस्जिदवाली गली में डॉ कलाम का पुश्तैनी घर था। पाठशाला - पाठशाला खुली है। इच्छा - मेरी इच्छा है कि मैं एक सच्चा इंसान बनूँ। तीव्र - तीव्र गति से रेलगाड़ी आ रही है।

ii. पर्यायवाची शब्द लिखें -

धनी - अमीर, घर - सदन, व्यक्ति - आदमी, दिन - दिवस, पत्नी - भार्या।

9. वर्षा बहार
(मुकुटधर पाण्डेय)

प्रस्तुत पंक्तियाँ मुकुटधर पाण्डेय द्वारा लिखित 'वर्षा बहार' शीर्षक कविता से ली गई हैं। यहाँ कवि ने वर्षा ऋतु की विशेषता एवं महत्व पर प्रकाश डाला है।

उनका कहना है कि वर्षा ऋतु का आगमन होते ही लोग अति प्रसन्न हो जाते हैं। काले-काले बादलों की घनघोर घटा से आकाश का दृश्य अति सुंदर दिखाई देने लगता है, बिजली चमकने लगती है, बादल के गर्जन-तर्जन से वातावरण उद्वेलित हो जाता है। वर्षा होते ही झरने के बहते जल से कल-कल की ध्वनि सुनाई पड़ने लगती है।

वर्षा काल में ठंडी हवायें चलने लगती हैं। हवा के झोंकों से वृक्ष की शाखाएँ हिलने लगती हैं। बागों में खिले फूलों को देखकर मालिन खुशी के गीत गाने लगती है, जलाशयों में जीव प्रसन्नता के साथ क्रीड़ा करने लगते हैं, ग्रीष्म ऋतु की गर्मी से संतप्त पपीहे वर्षाजल पाकर 'पीउ-पीउ' करते उड़ते नजर आते हैं।

बादलों की घनघोर घटा देख वन में मोर नाचने लगते हैं तथा मेढक अपने टर्र-टर्र की आवाज से वातावरण को मधुमय बना देते हैं।

वर्षाजल से रससिक्त होते ही गुलाब का फूल खिल जाता है तथा अपनी सुगंध से संपूर्ण बाग को सुगंधित बना देता है। इस ऋतु में पंक्तिबद्ध उड़ते हंस समूह मन को मोह लेते हैं। खेत में काम कर रहे किसान खेती करने की खुशी में मधुर गीत गाने लगते हैं। संसार में इस वर्षा बहार का विशेष महत्व है क्योंकि इसी वर्षा के जल पर सारे प्राणियों का जीवन एवं खुशी निर्भर करता है।

Scanned with CamScanner

अभ्यास के प्रश्न

i. प्रस्तुत कविता के आधार पर वर्षा ऋतु का वर्णन कीजिए।

उत्तर - प्रस्तुत कविता 'वर्षा बहार' में वर्षा ऋतु के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। इस ऋतु का आगमन होते ही आकाश में काले बादल छा जाते हैं। किसी चमकने लगती है तथा बादल गरजने लगते हैं। वर्षा का जल पाकर नदियों की धार तीव्र हो जाती है। हवा में शीतलता आ जाती है। पेड़-पौधे नये पत्ते धारण कर लेते हैं। वन-उपवन हरे-भरे हो जाते हैं। पपीहा पक्षी पीकू-पीकू करते हुए उड़ने लगते हैं। बादलों को देखकर मोर अपना पंख फैलाकर नाचने लगते हैं। मेढ़क की टर-टर करने से रात्रि की शांति भंग हो जाती है। साथ ही प्रकृति अद्भुत सौंदर्य से सज जाती है तथा फसल लगाने की खुशी में किसान मनमोहक गीत गाने लगते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि वर्षा ऋतु धरती की शोभा तथा सारे प्राणियों के जीवन का आधार है।

ii. वर्षा ऋतु में बाग-बगीचों में आनंद क्यों छा जाता है?

उत्तर - वर्षा ऋतु में बाग-बगीचों में आनंद इसलिए छा जाता है क्योंकि वर्षा होते ही सारे पेड़-पौधों में नये पत्ते लग जाते हैं। खिले फूलों से क्यारी सज जाती है। खिले गुलाब की सुगंध से बाग सुरभित हो जाता है। वन में नाचता मोर मन को मोह लेता है। इन्हीं कारणों से वर्षा ऋतु में बाग-बगीचों में आनंद छा जाता है।

iii. अर्थ स्पष्ट करें -

(क) खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है।

उत्तर - कवि के कहने का अर्थ यह है कि ग्रीष्म ऋतु के प्रचंड ताप से संतप्त गुलाब वर्षा का जल पाकर खिल उठता है तथा अपने सौंदर्य एवं सुरभि से बागों में आनंद रस का संचार कर देता है।

(ख) गाते हैं गीत कैसे, लेते किसान मनहर।

उत्तर - किसान खुशी का गीत इसलिए गाते हैं क्योंकि वर्षा ऋतु में ही वे फसल लगाते हैं तथा साल भर इसी परिश्रम के फल का उपभोग करते हैं।

व्याकरण

i. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।-

सुख - दुःख	सुन्दर - कुरूप
प्रसन्न - अप्रसन्न	ठण्डी - गर्मी

Scanned with CamScanner

10. कुंभा का आत्म बलिदान

शब्दार्थ – न्योछावर करना = अर्पित करना, रियासत = राज्य, परवाने = दिवाने, जाँबाज = जान पर खेलने वाला वीर, तिलमिला उठना = बेचैन हो जाना, चुटकियों बजाते = आसानी से, ठिठकना = थोड़े समय के लिए रुक जाना, परकोटे = घेरा, बुर्ज = गुम्बद, पेशानी = ललाट, ओजस्वी = दिप्तापूर्ण, अप्रत्याशित = जिसकी आशा न हो; आनबान = सम्मान।

अभ्यास – प्रश्न –

i. (क) राणा चित्तौड़ का रहने वाला था। (ख) बूँदी का नकली किला बनाया जाने लगा। (ग) वृद्ध हाड़ा राजपूत राणा की सेना में सैनिक थे। (घ) मंत्री ने सुझाव दिया कि बूँदी का नकली किला बनाया जाये। (ङ) वीर कुंभा बूँदी का सपूत था।

ii. हाड़ा राजपूतों की राणा से नाराजगी का क्या कारण था?

उत्तर – हाड़ा राजपूतों की राणा से नाराजगी का कारण यह था कि राणा की प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए बूँदी का नकली किला बनाया जा रहा था। इसे अपना अपमान मानकर राणा के परम स्वामीभक्त हाड़ा राजपूतों ने इसका विरोध करना उचित समझा। बूँदी उनकी मातृभूमि थी। कोई भी सच्चा देशभक्त प्राण रहते अपनी मातृभूमि को अपमानित होते नहीं देख सकता। हाड़ा राजपूत वीर इसी कारण राणा से नाराज थे,

iii. अपनी हार से क्रोधित हुए राणा ने अचानक क्या प्रतिज्ञा कर डाली?

उत्तर – अपने अपमानजनक पराजय से तिलमिलाये राणा क्रोध से आग बबूला होकर प्रतिज्ञा कर बैठे कि जबतक बूँदी पर अपना झंडा नहीं फहरा दूँगा तबतक एक बूँद पानी भी नहीं पीऊँगा।

iv. राणा की प्रतिज्ञा तुरंत पूरी करने में क्या कठिनाई थी?

उत्तर – बूँदी छोटा सा राज्य अवश्य था परन्तु वहाँ के हाड़ा राजपूत परम वीर थे। इन्होंने चित्तौड़ के शक्तिशाली राणा को युद्ध में धूल चटा दी थी। ऐसे परमवीर को बीना तैयारी किये पराजित करना आसान नहीं था, युद्ध की पूरी तैयारी करने में अधिक समय लगता। इसी कारण राणा की प्रतिज्ञा तुरंत पूरी किये जाने में यही कठिनाई थी।

v. बूँदी का नकली किला क्यों बनाया गया?

उत्तर – राणा की प्रतिज्ञा पूरी करवाने के लिए बूँदी का नकली किला बनाया गया ताकि राणा उसे जीतकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर लें।

vi. प्रस्तुत पाठ से हाड़ा कुंभा के किन-किन गुणों का पता चलता है?

उत्तर – प्रस्तुत पाठ से हाड़ा कुंभा के गुणों का पता चलता है कि कुंभा परम

Scanned with CamScanner

वीर, स्वामिभक्त, देशभक्त, स्वाभिमानी, दृढ़ निश्चयी तथा अपनी मातृभूमि के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित वीर था।

(6)

व्याकरण

1. जातिवाचक एवं व्यक्तिवाचक संज्ञाओं को छाँट कर लिखिए।

उत्तर—
जातिवाचक संज्ञा – मनुष्य, पशु-पक्षी, रजपूत, रियासत, कारीगर, किला, मातृभूमि, बेटा।
व्यक्ति वाचक संज्ञा - बूँदी, चित्तौड़, राणा, हुँमा।

ii. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए।

(क) धूल चटाना (हक्का छुड़ाना) – कुँवर सिंह ने अँग्रेजी सेना को आरा युद्ध में धूल चटा दिया।

(ख) आग बबूला होना (क्रोधित होना) – छात्र की अटपटी बात सुनकर शिक्षक आग बबूला हो गये।

(ग) आँखें लाल होना (क्रोध करना) – पुत्र की शरारत से पिता की आँखें लाल हो गई।

(घ) लाशों पर से गुजरना (अन्याय की हद पार करना) – कोई सेनानायक अपनी वीरता को दर्शाने के लिए यही कहेगा कि यदि हमें हराना है तो आपको लाशों पर से गुजरना होगा।

(ङ) मुँह की खाना (पराजित होना) – 1971 युद्ध में पाकिस्तान को भारत से मुँह की खानी पड़ी।

Scanned with CamScanner

क्र. 9
R. 13

11. कबीर के दोहे

(कबीर)

शब्दार्थ – पल = क्षण, बहुरि = दुबारा, जामें = जिसमें, कुम = खुद, सो = वह, दुर्जन = दुष्ट, दरार = फटे, पोथी = ग्रंथ, पंडित = विद्वान, आखर = अक्षर, जो = जब।

अर्थ – कबीर लोगों को सलाह देते हैं कि कल का काम आज ही कर लो और आज का काम अभी कर लो, क्योंकि इस जीवन का कोई भरोसा नहीं, इसलिए दुबारा इस काम को कब करोगे।

कबीर ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हे ईश्वर! मुझे उतना ही धन दो, जिसमें हमारे परिवार का भरण-पोषण हो जाये तथा मैं भी भूखा न रहूँ और मेरे द्वार पर आये कोई अतिथि गण भी भूखा न लौटें।

कबीर कहते हैं कि जो मनुष्य निंदा करने वाले हैं, उनसे घृणा नहीं करना चाहिए, बल्कि उन्हें तो अपने आँगन में झोपड़ी बनवाकर सदा ही समीप रखना चाहिए। कारण, वे स्वभाव से ही बिना पानी तथा साबुन का खर्च बढ़ाये, हमारे अंदर के दोषों को दूर कर देते हैं।

कबीर का कथन है कि किसी साधु या सज्जन की जाति मत पूछो, उससे उसकी ज्ञान की जानकारी प्राप्त करो, जैसे तलवार खरीदते समय उसकी तीक्ष्णता की कीमत लगाओ और म्यान को यों ही पड़ा रहने दो।

सज्जन या साधुजन का प्रेम जहाँ स्थायी होता है, वह टूटकर भी जुड़ जाने वाला होता है, वहीं दुर्जनों का प्रेम सर्वथा क्षणिक होता है, उनके प्रेम पर विश्वास करना धोखा खाना है।

कबीर कहते हैं कि ग्रंथों को पढ़ते-पढ़ते लोग मर गये लेकिन उन्हें सच्चे ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई। ज्ञान की प्राप्ति उन्हें ही होती है जिन्हें ढाई अक्षर प्रेम का ज्ञान होता है।

कबीर कहते हैं कि जब मैं दूसरों की बुराई देखने चला तो मुझे कहीं बुराई देखने को नहीं मिली। इस बात का पता तब चला जब कि अपने आप के विषय में सोचा तो मुझे ऐसा लगा कि बुरा व्यक्ति ही दूसरों की बुराई पर ध्यान देते हैं। अच्छे लोग तो दूसरों की अच्छाई पर ध्यान देते हैं।

प्रश्नोत्तर

1. पठित पाठ के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर सही का चिन्ह तथा गलत कथनों पर गलत का चिन्ह लगाइए।

(8)

(क) प्रेम की भाषा बोलने वाला ही पंडित होता है। (✓)
(ख) निंदा करने वालों को दूर रखना चाहिए। (✗)
(ग) कोई भी बात सोच-समझकर बोलनी चाहिए। (✓)
(घ) सज्जन व्यक्ति टूटता-जुड़ता रहता है जबकि दुर्जन केवल टूटता है। (✓)

ii. पठित पाठ में कौन सा दोहा आपको सबसे अच्छा लगा, क्यों?

उत्तर - पठित पाठ में प्रथम दोहा - काल्ह करे सो ---- बहुरि करेगा कब, यह मुझे अच्छा लगा क्योंकि इसमें कर्म के महत्त्व को बताया गया है। हमें हर काम समय पर करना चाहिए। समयानुसार काम करने से मन शांत रहता है तथा किसी प्रकार की बेचैनी नहीं होती। दूसरी बात वही व्यक्ति अपने जीवन में सफल होता है, जो अपना हर काम समय पर करता है, काम टालने वालों का जीवन सदा दुःखी रहता है, क्योंकि आलस्य के कारण उसे सफलता नहीं मिलती। यह जीवन क्षणभंगुर है इसलिए कोई भी काम कल पर नहीं छोड़ना चाहिए।

iii. हमें काम को कल के भरोसे क्यों नहीं टालना चाहिए?

उत्तर - एक कहावत है- 'दीर्घसूत्री विनश्यति' जो व्यक्ति काम को कल पर छोड़ देता है, उसका उद्देश्य कभी भी पूरा नहीं होता, इसलिए हर काम को अतिशीघ्र करना चाहिए, क्योंकि कल को किसी ने देखा नहीं है, जब जीवन ही अस्थायी है तो कल पर भरोसा कैसे किया जा सकता है। ज्ञानीजन वर्तमान में जीते हैं और वर्तमान को भविष्य के लिए नहीं छोड़ते।

iv. कबीर के उस दोहे का उल्लेख कीजिए, जिसमें, सज्जन, साधु जन और सोने की तुलना एक ही संदर्भ में की गई है।

उत्तर - सोना, सज्जन, साधुजन, टूटै जुरै सौ बार।
दुर्जन, कुंभ-कुम्हार के, एकै धका दरार।।

व्याकरण

i. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखें - (क) परले - प्रलय (ख) नियरे - नजदीक (ग) बहुरि - दुबारा (घ) आखर = अक्षर।

ii. कुछ 'जन' लगे शब्द लिखें - गुरुजन, गर्जन, मार्जन, तर्जन, परिजन।

iii. दोहे की दी गई पंक्तियों को बदलकर लिखिए -

(क) "मोल करो तलवार का" उत्तर - तलवार का मोल करें।

(ख) "बुरा जो देखन मैं चला" उत्तर - मैं जो बुरा देखने चला।

Scanned with CamScanner

12. जन्म-बाधा (सुधा)

शब्दार्थ - खाट = चारपाई, फिजूल = अनावश्यक, नाराज = अप्रसन्न, आफत = विपत्ति, हिज्जे = स्पेलिंग, रब्बा = परमात्मा, बँधुआ = बिना वेतन काम करने वाला, धीमर = सुस्त, मर्जी = इच्छा, भाँप जाना = समझ जाना, मुक्ति = छुटकारा, घोषणा = उद्घोष ।

प्रश्नोत्तर -

i. गुड्डी अपनी तुलना, बँधुआ मजदूर से क्यों करती है।

उत्तर - गुड्डी अपनी तुलना बँधुआ मजदूर से करती है, क्योंकि जिस प्रकार मजदूर अपनी मर्जी से कुछ नहीं कर सकता, उसी प्रकार गुड्डी भी अपनी मर्जी से कुछ नहीं कर सकती है। बँधुआ मजदूर को हर पल अपने मालिक के इशारों पर नाचना पड़ता है, डाँट सुननी पड़ती है, उसी प्रकार गुड्डी की भी दशा है। बँधुआ मजदूरों की भाँति गुड्डी भी पराधीनता महसूस करती है।

ii. माँ-बाप के लिए चाय बनाकर लाते समय उसके पैरों में फुर्ती आ गयी, क्यो ?

उत्तर - माँ-बाप के लिए चाय बनाकर लाते समय उसके पैरों में फुर्ती इसलिए आ गयी, क्योंकि गुड्डी ने अपनी उपेक्षा संबंधी पत्र प्रधानमंत्री को भेज दी थी। उसे विश्वास हो गया था कि जैसे ही प्रधानमंत्री हमारा पत्र पढ़ेगे वैसे ही हमें बँधुआ मजदूरों की भाँति परतंत्रता के बंधन से मुक्त करा देंगे। वह भी अन्य बच्चों की भाँति पढ़ने के लिए स्कूल जाएगी तथा घरेलू कामों से मुक्ति मिल जाएगी, इसी विश्वास को लेकर उसके पैरों में फुर्ती आ गयी थी।

iii. (क) "लेकिन क्यों नहीं सुनी जाएगी मेरी बात, हिज्जे गलत हों, पर बात तो सही है।" (i) ऐसा गुड्डी ने क्यों सोचा ?

उत्तर - गुड्डी ने ऐसा इसलिए सोचा कि सरकार का काम अन्यायी को दंड देना है तथा न्याय की रक्षा करना है। उनको मेरी समस्या पर विचार करना है न कि मेरे हिज्जे की गलती को देखना है।

(ii) यह वाक्य गुड्डी के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं को दर्शाता है।

उत्तर - इस वाक्य से स्पष्ट होता है कि गुड्डी स्वाभिमानी एवं शोषण का विरोधी है। वह लिंग-भेद को बुराई मानती है। वह अपने अधिकार प्राप्ति के लिए ही प्रधानमंत्री को पत्र लिखती है और अपनी समस्याओं से अवगत कराती है।

Q.3. ii. "टिकट कहाँ से लाऊँ ? बिना टिकट के ही भेज देती हूँ, वे तो समझ ही जाएंगे," (क) गुड्डी ने ऐसा क्यों सोचा ? (10)
उत्तर - गुड्डी ने ऐसा इसलिए सोचा कि समाज में लड़की को बोझ माना जाता है। इसी विवशता के कारण अपनी मुक्ति के लिए बिना टिकट का पत्र भेज देती है।
(ख) यह वाक्य गुड्डी के किस पक्ष को दर्शाता है ?
उत्तर - यह वाक्य गुड्डी के हीनता पक्ष को दर्शाता है। वह लड़की है इसलिए उसे लड़के जैसी सुविधा प्राप्त नहीं है। उसे विवशतापूर्ण जीवन जीने की मजबूरी है।

13. शक्ति और क्षमा

(रामधारी सिंह 'दिनकर')

शब्दार्थ - तप = तपस्या, मनोबल = नैतिक साहस, नर-व्याघ्र = नर रूपी बाघ, कहो = बताओ, रिपु = दुश्मन, विनत = विनम्र, समक्ष = सामने, कायर = डरपोक, भुजंग = साँप, गरल = विष, पंथ = रास्ता, अनुनय = निवेदन, पौरुष = वीरता, शर = बाण, मूढ़ = मूर्ख, दीप्ति = चमक, दर्प = शान, गर्व, रोब।

भावार्थ - महाभारत युद्ध के बाद युधिष्ठिर जब युद्ध के परिणाम पर सोचते हैं तो अपने विजय पर उनको शोक होता है। वे शय्या पर पड़े भीष्म पितामह के पास मानसिक शांति के लिए जाते हैं। पितामह उन्हें समझाते हुए कहते हैं कि तुम्हारा शोक करना व्यर्थ है। तुमने क्षमा, दया, तपस्या, त्याग आदि सब कुछ का प्रयोग किया लेकिन दुर्योधन ने तुम्हारी एक नहीं मानी। तुम जितना ही झुकते गये वह तुम्हें उतना ही डरपोक समझा। क्षमा आदि गुण तो शक्तिशाली व्यक्ति को ही शोभा देता है। शक्ति के बिना यह सब गुण तो कायरता और पौरुषहीनता की निशानी है।

भीष्म आगे कहते हैं कि शक्ति प्रदर्शन के बिना कोई किसी के वीरता को नहीं पहचानता। लंका-विजय के क्रम में राम ने तीन दिनों तक समुद्र से राह देने की प्रार्थना की, लेकिन समुद्र पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अंत में राम के क्रोध को देख कर समुद्रदेव व्याकुल गये और राम की शरण में आ गये। ऐसी स्थिति में हर व्यक्ति को परिस्थिति के अनुसार अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना चाहिए, तभी उसकी शक्ति शोभा पाती है।

भीष्म का कथन है कि शक्तिशाली में ही नम्रता प्रभावपूर्ण हो सकती है। युद्ध जीतने की क्षमता रखने वालों द्वारा ही संधि का प्रस्ता

Scanned with CamScanner

सम्मान के योग्य होता है। साथ ही शक्तिशाली व्यक्ति में निहित सहनशीलता, क्षमा, दया आदि गुण संसार द्वारा पूजित होते हैं। कवि ने भारतीयों को यह संदेश देना चाहा है कि हमारा अतीत अति गौरवशाली रहा है। इसलिए हमें अपने पूर्वजों की गौरव गाथा से सीख लेते हुए अपने पुरुषार्थ का प्रदर्शन करने का प्रयास करना चाहिए।

प्रश्नोत्तर -

i. इस कविता के माध्यम से हमें क्या सीख मिलती है?

उत्तर - इस कविता से हमें यही सीख मिलती है कि संसार शक्ति के समक्ष अपना सिर झुकाता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व की पहचान उसके पुरुषार्थ से होती है। जबतक युधिष्ठिर और राम विनम्रता से निवेदन करते रहे, तबतक दुर्योधन और समुद्र ने युधिष्ठिर और को कायर समझा। जैसे ही दोनों ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया, दोनो पद दलित हो गये। उसी प्रकार हम भारतवासियों को अपने पुरुषार्थ का परिचय देते हुए अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करने का प्रयास करना चाहिए।

ii. वे कौन सी परिस्थितियाँ थी जिन्होंने राम को धनुष उठाने पर बाध्य किया?

उत्तर - राम को धनुष उठाने पर बाध्य तब होना पड़ा, क्योंकि रावण सीता का अपहरण कर लंका ले गया था। सीता की वापसी के लिए राम लंका जा रहे थे। समुद्र पार जाने के लिए राम ने समुद्र देव से तीन दिनों तक रास्ते की माँग की, लेकिन समुद्र देव ने राम की प्रार्थना अस्वीकार कर दी। तब राम ने समुद्र को सुखाने के लिए धनुष पर अग्निबाण चढ़ाया। अग्निबाण की ज्वाला से सभी जल जीव त्राहि-त्राहि करने लगे तब देह धारण कर समुद्र ने राम के समक्ष घुटने टेक दिए। इससे स्पष्ट होता है कि दुष्ट शक्ति के सामने ही झुकते हैं।

iii. निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट करें—
क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो।
उसको क्या, जो दंतहीन, विषहीन, विनीत सरल हो॥

उत्तर - क्षमा उस व्यक्ति को शोभा देती है जिसमें शक्ति होती है। शक्तिहीन व्यक्ति को लोग कायर समझते हैं। जिस प्रकार दंतहीन तथा विषहीन साँप से कोई नहीं डरता है क्योंकि ऐसे साँप के काटने पर मृत्यु का भय नहीं होता।

व्याकरण

i. निम्न शब्दों का पर्यायवाची शब्द लिखें—
भुजंग - सर्प, अहि, साँप
रघुपति - राम, राघव, दशरथनंदन
सिंधु - सागर, पयोधि, जलनिधि
शर - बाण, विशिख, तीर
कायर - डरपोक, कमजोर, डरनेवाला।

14. हिमशुक
(शंकर शैलेन्द्र)

शब्दार्थ - गुणी = गुणवान, फौरन = तुरंत, अनोखा = विचित्र, वाह = प्रण, हुक्म = आदेश, राजी = सहमत, उपहार = भेंट, मेहरबानी = दया, कृपा, फाका = उपवास, बेकसूर = निर्दोष, बेहद = बहुत अधिक

प्रश्नोत्तर

i. अवध नरेश राजकुमारों की परीक्षा क्यों लेना चाहते थे?
उत्तर - अवध नरेश राजकुमारों की परीक्षा इस लिए लेना चाहते थे क्योंकि उन तीनों में से किसी एक राजकुमार को राजा अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करना चाहता था।

ii. हिमशुक ने तो राजा के लिए भेंट लाया था लेकिन वही भेंट उसे महँगी पड़ी, कैसे?

Scanned with CamScanner

उत्तर - हिमशुक तो राजा के लिए भेंट लाया था वही भेंट उसे इस लिए मँहगी पड़ी क्योंकि साँप ने उस भेंट में विष डाल दिया था। जिसके कारण अमृत फल जहरीला हो गया था। मुख्य मंत्री के कथनानुसार जब फल का एक टुकड़ा कौए को खिलाया गया तो कौए की मौत हो गई। राजा को लगा कि हिमशुक जहरीला फल खिलाकर मुझे मारना चाहता है। इसलिए राजा ने हिमशुक को मार डाला। जबकि हिमशुक इस बात से अनजान था।

iii. राजा ने अपने तीसरे बेटे को ही युवराज घोषित क्यों किया?

उत्तर - राजा ने अपने तीसरे बेटे को ही युवराज घोषित इसलिए किया कि जब राजा ने तीनों लड़कों की परीक्षा लेने के लिए बुलाया तो उसने कहा - "अगर मैं अपने जीवन की सम्मान एवं रक्षा की जिम्मेवारी किसी को सौंप दूँ और वह विश्वासघाती निकले तो उसे क्या सजा दी जानी चाहिए?"

बड़े लड़के ने जवाब दिया ऐसे व्यक्ति की गर्दन धड़ से अलग कर देना चाहिए। दूसरे लड़के ने कहा उन्हें मृत्यु दंड मिलना चाहिए लेकिन छोटे लड़के ने कहा - उसे दंड तो मिलना ही चाहिए, परन्तु दंड देने से पहले यह बात पूरी तरह साबित होनी चाहिए कि वह सचमुच में दोषी है। इस बात को साबित करने के लिए उसने राजा को हिमशुक की कहानी सुनायी कि किस प्रकार विदर्भ देश के राजा को अपनी गलती पर अफसोस करना पड़ा। राजा ने छोटे लड़के की बुद्धिमता पर प्रसन्न होकर उसे अपना उत्तराधिकारी बना दिया।

iv. निम्नलिखित वाक्यांश किसने किससे कहे:

(a) तुम्हारी माँ भी तुमसे मिलकर इतनी ही प्रसन्न होगी।

उत्तर - हिमशुक के पिता ने हिमशुक से कहा कि तुम्हारी माँ भी तुमसे मिलकर

इतनी ही प्रसन्न होगी।

(ख) मैं पन्द्रह दिन बाद वापस आ जाऊँगा।

उत्तर - हिमशुक ने विदर्भ देश के राजा से कहा - जब वह घर के लिए रवाना हो रहा था।

(ग) बुद्धिमानी की बात यह होगी कि फल खाने से पहले इसे किसी जानवर को खिलाकर देख लिया जाए।

उत्तर - मुख्यमंत्री ने विदर्भ देश के राजा से कहा कि फल खाने से पहले इसे किसी जानवर को खिलाकर देख लिया जाये।

(घ) किसी को सजा देने से पहले इस बात का पूरा-पूरा पता होना चाहिए कि वह सचमुच अपराधी है या नहीं।

उत्तर - छोटे राजकुमार ने अपने पिता से कहा कि किसी को सजा देने से पहले इस बात का पूरा-पूरा पता लगा लेना चाहिए कि वह सचमुच अपराधी है या नहीं।

5. सही विकल्प पर (✓) का चिन्ह लगावें।

(क) हिमशुक एक नाम है - (क) जानवर (ख) आदमी (ग) पक्षी (घ) जंगल। उत्तर - (ग)

(ख) किस देश के राजा के पास अनोखा तोता था? - (क) अवध (ख) विदर्भ (ग) गंधार (घ) कोसल

उत्तर - (ख)। (ग) हिमशुक रात में कहाँ ठहरा था? - (क) पेड़ पर (ख) पहाड़ पर (ग) छत पर (घ) गुम्बद पर। उत्तर - (क)। (घ) जहरीले फल को राजा ने क्या किया? - (क) नदी में फेंक दिया (ख) जलवा दिया (ग) स्वयं खा गया (घ) गड्ढे में दबवा दिया। उत्तर - (घ)

व्याकरण – युग्म शब्दों से वाक्य बनायें –

(साथ-साथ) - इस मुकदमे में मोहन के साथ-साथ सोहन को भी सजा दी गई।

(दो-चार) – राम दो-चार घंटों में यह पुस्तक पढ़ लेगा।

(एक-एक) - अपराधी ने एक-एक करके सबको पीटा।

(पूरा-पूरा) - सोहन को अपना पूरा-पूरा पाठ याद करना चाहिये।

(बढ़ते-बढ़ते) - भारतीय सैनिक बढ़ते-बढ़ते लाहौर के निकट रावी तट तक पहुँच गये।

ii. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें –

(क) जो किसी के विश्वास को ठेस पहुँचाए - विश्वासघाती।

(ख) राजा का लड़का राजकुमार।

(ग) किसी की मृत्यु के बाद उसकी संपत्ति पाने का अधिकार उत्तराधिकारी।

(घ) मौत की सजा - मृत्युदंड।

(ङ) किये गये उपकारों को नहीं मानने वाला कृतघ्न।

(च) किये गये उपकारों को मानने वाला कृतज्ञ।

व्याकरण

सन्धि — दो वर्णों के मेल से होनेवाले विकार को सन्धि कहते हैं। जैसे .अ + ई = ए , देव + इन्द्र = देवेन्द्र ।

सन्धि के भेद — (I) स्वर संधि - दो स्वरों के मेल से उत्पन्न विकार अथवा रूप-परिवर्तन को 'स्वरसन्धि' कहते हैं। जैसे - शिव + आलय = शिवालय

स्वर सन्धि के प्रकार -(क) दीर्घ स्वर सन्धि - दो सवर्ण स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते हैं। जैसे, अ + अ = आ, अन्न + अभाव = अन्नाभाव ।

(ख) गुण स्वर संधि - यदि 'अ' या 'आ' के बाद इ, ई, उ, ऊ या ऋ आये तो दोनों मिलकर क्रमशः ए, ओ और अर् हो जाते हैं। जैसे-
अ + ई = ए , देव + ईश = देवेश, अ + उ = ओ - चन्द्र + उदय = चन्द्रोदय, अ + ऋ = अर् - देव + ऋषि = देवर्षि ।

(ग) वृद्धि संधि - यदि अ या आ के बाद ए या ऐ हो तो दोनों के स्थान में ऐ, ओ या औ आये तो दोनो के स्थान पर औ हो जाता है, जैसे - अ + औ = औ - परम + औषध = परमौषध ।

(घ) यण् सन्धि - यदि इ, ई, उ, ऊ या ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आये तो इ-ई का य्, 'उ-ऊ' का व् , और ऋ का र् हो जाता है। जैसे-
इ + अ = य् - यदि + अपि = यद्यपि, अ + उ = व् - अति + उत्तम = अत्युत्तम, अनु + अय = अन्वय , ऋ + आ = र् - पितृ + आदेश = पित्रादेश ।

(ङ) अयादि सन्धि - यदि ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई भिन्न स्वर आये तो ए का अय्, ऐ का आय् , ओ का अव्, तथा औ का आव् हो जाता है। जैसे - ने + अन = नयन, नै + अक = नायक , पो + अन = पवन, पौ + अक = पावक ।

II. व्यंजन संधि - व्यंजन से स्वर अथवा व्यंजन के मेल से उत्पन्न विकार को व्यंजन संधि कहते हैं। जैसे - दिक् + गज = दिग्गज ।

नियम -(क) यदि क्, च्, ट्, त्, प् के बाद किसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण आये या य, र, ल, व या कोई स्वर आये तो क्, च्, ट्, त्, प् के स्थान में अपने ही वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है। जैसे-
अच् + अन्त = अजन्त, सत् + वाणी = सद्वाणी, जगत् + आनंद = जगदानंद ।

(ख) यदि क्, च्, ट्, त्, प् के बाद न या म हो तो क्, च्, ट्, त्, प् अपने वर्ग के पंचम वर्ण में बदल जाता है। जैसे - उत् + नति = उन्नति ।

(ग) यदि म् के बाद कोई स्पर्श व्यंजन हो तो म् का अनुस्वार या बादवाले वर्ण के वर्ग का पँचम् वर्ण हो जाता है। जैसे - अहम् + कार = अहँकार, अहङ्कार
किम् + चित = किंचित, किञ्चित ।

Scanned with CamScanner

(ग) यदि 'त्-द्' के बाद 'ल' रहे तो त्-द् 'ल' में बदल जाता है तथा 'न्' के बाद 'ल' रहे तो 'न्' का अनुनासिक के साथ 'ल्' हो जाता है। जैसे-
उत् + लास = उल्लास, महान् + लाभ = महाँल्लाभ ।
(ङ) यदि वर्गों के अंतिम वर्णों को छोड़ शेष वर्णों के बाद 'ह्' आये तो 'ह्' पूर्व वर्ण के वर्ग का चतुर्थ वर्ण हो जाता है तथा 'ह्' के पूर्व वाला वर्ण अपने वर्ग का तृतीय वर्ण हो जाता है। जैसे - उत् + हत = उद्धत, वाक् + हरि = वाग्घरि ।
(च) ह्रस्व स्वर के बाद 'छ' हो तो 'छ' के पहले 'च्' जुड़ जाता है। दीर्घ स्वर के बाद 'छ' होने पर यह विकल्प से होता है। जैसे -
परि + छेद = परिच्छेद, शाला + छादन = शालाच्छादन ।

विसर्ग संधि - विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से जो विकार होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं। जैसे -
धनु + टंकार = धनुष्टंकार, निः + चय = निश्चय ।
नियम - (क) यदि विसर्ग के बाद 'च-छ' हो तो विसर्ग का 'श्', 'ट-ठ' हो तो 'ष्' तथा 'त-थ' हो तो 'स्' हो जाता है। जैसे -
निः + छल = निश्छल, ततः + ठकार = ततष्ठकार, निः + तार = निस्तार ।
(ख) यदि विसर्ग के पहले इकार या उकार आये और विसर्ग के बाद का वर्ण क, ख, प, फ हो तो विसर्ग का 'ष्' हो जाता है। जैसे -
निः + पाप = निष्पाप, निः + फल = निष्फल ।
(ग) यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो और बाद में क, ख, प, फ में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग ज्यों का त्यों रह जाता है। जैसे - प्रातः + काल = प्रातः काल ।
(घ) यदि 'इ-उ' के बाद विसर्ग हो तथा उसके बाद 'र' आये तो 'इ-उ' का क्रमशः ई, ऊ हो जाता है और विसर्ग लुप्त हो जाता है। जैसे -
निः + रस = नीरस, निः + रोग = नीरोग।
(ङ) यदि विसर्ग के पहले अ और आ को छोड़कर कोई दूसरा वर्ण आये और विसर्ग के बाद कोई स्वर हो या किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण हो या य, र, ल, व, ह हो तो विसर्ग के स्थान पर 'र्' हो जाता है। जैसे - दुः + गन्ध = दुर्गन्ध, निः + जल = निर्जल, निः + धन = निर्धन ।
(च) यदि विसर्ग के पहले 'अ' आये और उसके बाद वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण आये या य, र, ल, व, ह रहे तो विसर्ग का 'उ' हो जाता है तथा यह 'उ' पूर्ववर्ती 'अ' से मिलकर गुण संधि द्वारा 'ओ' हो जाता है। जैसे - मनः + रथ = मनोरथ।
(छ) यदि विसर्ग के आगे-पीछे 'अ' हो तो पहला 'अ' और विसर्ग मिलकर ओकार और बादवाले 'अ' का लोप होकर उसके स्थान पर लुप्ताकार (ऽ) का चिन्ह लगा जाता है। जैसे - प्रथमः + अध्यायः = प्रथमोऽध्यायः, यशः + अभिलाषी = यशोऽभिलाषी।

Scanned with CamScanner

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द —

जिसके पाणि में चक्र है - चक्रपाणि, जिसके चार भुजाएँ हैं - चतुर्भुज,
जिसके दश आनन हैं - दशानन, जिसके आने की तिथि न हो - अतिथि,
जिसके शेखर पर चन्द्र है - चन्द्रशेखर, जिसके समान दूसरा न हो - अद्वितीय,
जिसके पार देखा जा सके - पारदर्शक, जिसके हृदय में ममता नहो - निर्मम,
जिसके हृदय में दया नहो - निर्दय, जिसकी ग्रिवा सुंदर हो - सुग्रीव,
जिसके दो पैर हैं - द्विपद, जो सर्वशक्ति सम्पन्न हो - शक्तिमान,
जिसका कोई नाथ न हो - अनाथ, जिसका कोई शत्रु न जन्मा हो - अजातशत्रु,
जो पृथ्वी से सम्बद्ध है - पार्थिव, जिसकी उपमा न हो - अनुपम,
जो कम जानता है - अल्पज्ञ, जो कुछ नहीं जानता है - अज्ञ,
जो मूक के मर्म का हाल जानता हो - मूकमर्मवेत्ता, स्वेद से उत्पन्न होनेवाला - स्वेदज,
जो सबमें व्याप्त है - सर्वव्यापी, इन्द्रियों को जीतनेवाला - जितेन्द्रिय,
जो स्त्री के वशीभूत हो - स्त्रैण, भविष्य में होनेवाला - भावी,
जो कला जानता है - कलाविद् कलाकार, जो सरों से जन्मता है सरिज,
जो पर के अधीन है - पराधीन, जो देखने में प्रिय लगता है - प्रियदर्शी,
आया हुआ - आगत, लोक का - लौकिक, परलोक का - परलौकिक,
जो स्त्री अभिनय करे - अभिनेत्री, जो दूसरों से ईर्ष्या करता है - ईर्ष्यालु,

श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द —

अविराम = लगातार	फन = कला	वर्ण = रंग, अक्षर, जाति
अभिराम = सुंदर	फण = साँप का फण	व्रण = घाव
अंगना = स्त्री	बलि = बलिदान	सर = तालाब
अँगना = घर का आँगन	बली = बलवान	शर = बाण
आसन = निकट	बदन = शरीर	शुचि = पवित्र
आसन = बैठने की वस्तु	वदन = मुख	सूची = तालिका
असन = भोजन	बान = आदत	शाला = घर
कुल = वंश	बाण = तीर	साला = पत्नी का भाई
कूल = किनारा	मास = महीना	सुधी = विद्वान
तरणी = नाव	मांस = गोश्त	सुधि = याद
तरुणी = युवती	राज = शासन	सूत = धागा
तरणि = सूर्य	राज = रहस्य	सुत = पुत्र
परिक्षा = किचड़	लक्ष = लाख	सहर = सवेरा
परीक्षा = इम्तहान	लक्ष्य = उद्देश्य	शहर = नगर

Scanned with CamScanner

विपरीतार्थक शब्द

अवनति = उन्नति, घात = प्रतिघात, अमर = नश्वर, ख्यात = कुख्यात, गद्य = पद्य, आदि = अंत, कल्पित = वास्तविक, गृही = संन्यासी, अनुग्रह = निग्रह, गुरु = लघु, चल = अचल, अंतरंग = बहिरंग, चर = अचर, अनुकूल = प्रतिकूल, चंचल = शांत, अधम = उत्तम, ज्येष्ठ = कनिष्ठ, जड़ = चेतन, अपेक्षा = उपेक्षा, अकाल = सुकाल, अनुरक्त = विरक्त, विधि = निषेध, प्रवृत्ति = निवृत्ति, आस्था = अनास्था, निषिद्ध = विहित, आयात = निर्यात, सापेक्ष = निरपेक्ष, इहलोक = परलोक, प्रलय = सृष्टि, सूक्ष्म = स्थूल, कटु = मधु।

पर्यायवाची शब्द — अमृत - सुधा, मधु, पीयूष। असुर - दानव, राक्षस, दैत्य। इच्छा - कामना, मनोरथ, आकांक्षा। उन्नति - उत्थान, विकास, उत्कर्ष। कामदेव - मदन, अनंग, मन्मथ। किरण - रश्मि, मयूख, मरीचि। किनारा - तट, तीर, कूल। चतुर - चालाक, निपुण, प्रवीण। चोर - खनक, कुंभिल। दुःख = वेदना, कष्ट, पीड़ा। यमुना = कालिंदी, कृष्णा, धन = सम्पत्ति, दौलत, ऐश्वर्य। नाव = तरणी, नौका, जलयान। नरक = यमलोक, कुंभीपाक, रौरव। प्रकाश = ज्योति, चमक, आलोक। बिजली = चपला, दामिनी, सौदामिनी। भ्रमर = अलि, भौंरा, मधुकर। मछली = मीन, मत्स्य, सफरी। मृत्यु = मौत, मरण, देहांत। मोक्ष = निर्वाण, मुक्ति, परमपद

क्रिया से भाववाचक संज्ञा बनाइए — कहना = कथन, खोजना = खोज, जोड़ना = जोड़, खाना-पीना = खान-पान, जीतना = जीत, सजाना = सजावट, कमाना = कमाई, मांगना = मांग, घबराना = घबराहट, पीटना = पिटाई, बचना = बचाव, समझना = समझ, देना = देन, धोना = धुलाई, हँसना = हँसी

विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनाइए — अधिक = आधिक्य, उपयोगी = उपयोगिता, ऊँचा = ऊँचाई, खुश = खुशी, गरीब = गरीबी, गुरु = गुरुत्व, कुशल = कुशलता, चतुर = चतुराई, चिकना = चिकनाहट, जटिल = जटिलता, जातीय = जातीयता, तीव्र = तीव्रता, दीन = दीनता, दयालु = दयालुता, बूढ़ा = बुढ़ापा, भारतीय = भारतीयता, भावुक = भावुकता, प्राचीन = प्राचीनता, रक्त = रक्तता, राष्ट्रीय = राष्ट्रीयता, लघु = लघुता, लाल = लालिमा, विधवा = वैधव्य, सभ्य = सभ्यता, स्वीकृत = स्वीकृति, हार्दिक = हार्दिकता,

जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनाइए — जाति = जातीयता, भाई = भाईचारा, पशु = पशुत्व, लड़का = लड़कपन, जवान = जवानी, बच्चा = बचपन, मनुष्य = मनुष्यत्व, पुरुष = पौरुष, अंधा = अंधत्व, नारी = नारीत्व, पात्र = पात्रता, स्त्री = स्त्रीत्व, मित्र = मित्रता।

Scanned with CamScanner